



स्टार्टअप इंडिया इनोवेशन वीक

प्रलिस के लयि:

राष्ट्रीय स्टार्टअप दविस, राष्ट्रीय स्टार्टअप पुरस्कार 2022, SISFS, NIDHI, स्टार्टअप इकोसिस्टम (RSSSE) के समर्थन पर राज्यों की रैंकिग।

मेन्स के लयि:

भारत में स्टार्टअप पारस्थितिकी तंत्र वकिस के चालक, स्टार्टअप पारस्थितिकी तंत्र से जुड़ी समस्याएँ, स्टार्टअप संस्कृतिको बढावा देने के लयि सरकार की पहल।

चर्चा में क्यों?

हाल ही में [राष्ट्रीय स्टार्टअप दविस](#) (16 जनवरी) के अवसर पर स्टार्टअप इंडिया इनोवेशन वीक का समापन नेशनल स्टार्टअप अवार्ड्स 2022 के साथ हुआ।

- वाणजिय और उद्योग मंत्रालय द्वारा राष्ट्रीय स्टार्टअप पुरस्कार 2022 उन स्टार्टअप और समर्थकों को प्रदान कयि गए हैं जन्होंने भारत के वकिस में क्रांति लाने हेतु महत्त्वपूर्ण भूमिका नभाई है।
- स्टार्टअप इंडिया ने "चैपियनिगि द बलियिन डॉलर डरीम" वषिय पर उद्योग केंद्रति वेबिनार का आयोजन कयि।

भारत में स्टार्टअप्स की स्थिति:

- परचिय:
 - भारत, स्टार्टअप पारतंत्र में संयुक्त राज्य अमेरिका और चीन के बाद तीसरे स्थान पर है।
 - बैन एंड कंपनी द्वारा प्रकाशति [इंडिया वेंचर कैपिटल रिपोर्ट 2021](#) के अनुसार, **संचयी स्टार्टअप्स की संख्या वर्ष 2012 से 17% की चक्रवृद्धि वार्षिक वकिस दर (CAGR)** से बढी है।
- वकिस का चालक:
 - **बडा घरेलू बाज़ार:** भारत में **प्रौद्योगिकी आधारति उत्पादों** और सेवाओं के लयि एक बडा घरेलू बाज़ार है, जो स्टार्टअप को अपने उत्पादों एवं सेवाओं को बेचने के लयि एक तैयार बाज़ार प्रदान करता है।
 - **सरकारी सहायता:** भारत सरकार सकरयि रूप से **'आत्मनरिभर भारत'** और **'डजिटल इंडिया'** जैसी पहलों के माध्यम से उद्यमति को बढावा दे रही है, जो स्टार्टअप कंपनयिों को सहायता प्रदान कर रही हैं।
 - **प्रौद्योगिकी तक पहुँच:** **प्रौद्योगिकी और इंटरनेट में प्रगति** ने स्टार्टअप्स को तेज़ी से आगे बढने में सकषम बनाया है, यही कारण है की पारस्थितिकी तंत्र में कई यूनिकॉर्न का उदय हुआ है।
 - **राइज़िंग स्टार्टअप हब:** भारत में प्रमुख स्टार्टअप हब **बंगलूरु, मुंबई और दल्लि-NCR** हैं, जो स्टार्टअप्स के बढने एवं वकिस के लयि अनुकूल वातावरण प्रदान करते हैं।
 - वषिष रूप से बंगलूरु शहर में स्थति बडी संख्या में प्रौद्योगिकी कंपनयिों के कारण इसे **'भारत की सलिकॉन वैली'** घोषति कयि गया है।
- स्टार्टअप पारस्थितिकी तंत्र से संबंधति समस्याएँ:
 - **सख्त नयामक वातावरण:** बाज़ार के कानून और नयिम हमेशा स्टार्टअप्स की ज़रूरतों के अनुरूप नहीं होते हैं, जसिसे उनका पालन करना मुश्कल हो सकता है। यह स्टार्टअप्स कंपनयिों पर गंभीर दबाव डाल सकता है।
 - **सीमति बुनयादी ढाँचा और लॉजसिटिक्स:** उचति बुनयादी ढाँचे और लॉजसिटिक्स की कमी स्टार्टअप्स खासकर **ई-कॉमर्स** कषेत्र में काम करने वालों के लयि बडी चुनौती हो सकती है।
 - अपर्याप्त परविहन, वेयरहाउसगि और लॉजसिटिक्स इंफ्रास्ट्रक्चर स्टार्टअप्स के लयि ग्राहकों तक पहुँचना और उनके उत्पादों को समय पर डलिवर करना मुश्कल बना सकता है।
 - **मेंटरशपि और गाइडेंस की कमी:** स्टार्टअप्स में अकसर अनुभवी मेंटर्स और गाइडेंस की कमी होती है, जसिसे उनके लयिबज़िनेस लैंडसकेप को नेवगिट करना तथा नरिणय लेना मुश्कल हो सकता है।
- स्टार्टअप पारतंत्र के प्रोत्साहन के लयि हालिया सरकारी पहल:

- **स्टार्टअप इंडिया सीड फंड स्कीम (SISFS):** यह योजना स्टार्टअप्स को उनके वैचारिक धारणाओं को साबित करने, प्रोटोटाइप विकसित करने, उत्पादों का परीक्षण और बाज़ार तक पहुँच बनाने में मदद के लिये वित्तीय सहायता प्रदान करती है।
- **नवाचारों के विकास और दोहन के लिये राष्ट्रीय पहल (National Initiative for Developing and Harnessing Innovations- NIDHI):** यह स्टार्टअप्स के लिये एक एंड-टू-एंड (End to End) योजना है जिसका लक्ष्य पाँच वर्ष की अवधि में इनक्यूबेटर्स और स्टार्टअप्स की संख्या को दोगुना करना है।
- **स्टार्टअप पारितंत्र के समर्थन स्तर पर राज्यों की रैंकिंग (Ranking of States on Support to Startup Ecosystems- RSSSE):** वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय के अंतर्गत उद्योग संवर्द्धन एवं आंतरिक व्यापार विभाग (DPIIT) वर्ष 2018 से राज्यों द्वारा स्टार्टअप पारितंत्र को दिये जा रहे समर्थन के आधार पर उनको रैंकिंग प्रदान कर रहा है।

आगे की राह

- **नवाचार को प्रोत्साहन:** सरकार और नजीक क्षेत्र को अनुसंधान एवं विकास के लिये धन तथा अन्य प्रकार का सहयोग प्रदान कर नवाचार को प्रोत्साहित करना चाहिये।
 - इसके अंतर्गत **शोध एवं विकास केंद्र** स्थापित करना, इसमें निवेश करने वाली कंपनियों को कर संबंधी प्रोत्साहन प्रदान करना और **स्टार्टअप को विश्वविद्यालयों एवं अनुसंधान संस्थानों से जोड़ना** शामिल हो सकता है।

स्कूल-उद्यमिता गलियारा: **राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020** उद्योगों के साथ साझेदारी कर व्यावसायिक शिक्षा प्रदान करके और स्कूल स्तर पर नवाचार को बढ़ावा देकर छात्र उद्यमियों को प्रोत्साहित करती है।

यदि उद्यमशीलता कौशल को शिक्षा पाठ्यक्रम के साथ एकीकृत किया जाए तो यह भारत में स्टार्टअप पारितंत्र पर अनुकूल प्रभाव डाल सकता है।

स्टार्टअप्स की सामाजिक स्वीकार्यता: भारत के विभिन्न **यूनिकॉर्नस** के साथ मिलकर सरकार को **उद्यमी करियर के सामाजिक स्वीकृति की दशा में काम करने** और सुलभता से करियर चुनने के लिये युवाओं को सही दशा प्रदान करने की आवश्यकता है।

वोकल फॉर लोकल, लोकल टू ग्लोबल: भारतीय स्टार्टअप्स में न केवल भारतीय पारंपरिक समस्याओं के समाधान की क्षमता है, बल्कि विदेशी बाजारों के लिये ये अनुकूलित समाधान भी प्रदान करते हैं।

भारत को एक उद्यमशीलता और नरियात केंद्र बनाने हेतु आत्मनिर्भर भारत पहल से जुड़े राज्यों में भी विशेष स्टार्टअप जोन शुरू किये जा सकते हैं।

UPSC सविलि सेवा परीक्षा, पछिले वर्ष के प्रश्न:

प्रश्न. उद्यम पूंजी का क्या अर्थ है? (2014)

- उद्योगों को प्रदान की गई एक अल्पकालिक पूंजी
- नए उद्यमियों को प्रदान की गई दीर्घकालिक स्टार्टअप पूंजी
- घाटे के समय में उद्योगों को दिया जाने वाला धन
- उद्योगों के प्रतस्थापन और नवीकरण के लिये प्रदान किया गया धन

उत्तर : (b)

स्रोत: पी.आई.बी.